

स्वामी केषवानन्द राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय, बीकानेर

'जलवायु अनुकूल लवणीय कृषि : सतत् आजीविका सुरक्षा में सहायक' – राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन

बीकानेर। 21 जनवरी 2017। भारतीय मृदा लवणता एवं जल गुणवत्ता सोसायटी, करनाल, स्वामी केशवानन्द राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय, बीकानेर व केन्द्रीय मृदा लवणता अनुसंधान संस्थान, करनाल के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित पांचवीं राष्ट्रीय सेमिनार "जलवायु अनुकूल लवणीय कृषि : सतत् आजीविका सुरक्षा में सहायक" का उद्घाटन दिनांक 21 जनवरी 2017 को राजस्थान पशु चिकित्सा एवं पशु विज्ञान विश्वविद्यालय, बीकानेर के सभागार में आयोजित किया गया ।

उद्घाटन सत्र के अध्यक्ष स्वामी केषवानन्द राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर बी.आर. छीपा ने किसानों से निवेदन किया किसान यदि कृषि वैज्ञानिकों की सलाह पर विश्वास कर उसकी अनुपालना करें और फसलों में आवश्यकता से अधिक पानी का उपयोग न करें तो लवणता की बढ़ती समस्या को काफी हद तक कम कर पैदावार बढ़ायी जा सकती है । उन्होंने वैज्ञानिकों से भी अनुरोध किया कि वे किसानों के खेतों में जाकर उनकी समस्याओं के अनुरूप अनुसंधान कर उसका उपाय सुझाये तथा तकनीकी ज्ञान को साधारण भाषा में लिखकर उसका अधिक से अधिक प्रचार-प्रसार करें ताकि किसानों को अधिक से अधिक फायदा मिल सके ।



कार्यक्रम के मुख्य अतिथि डॉ. गुरुबचन सिंह, अध्यक्ष, कृषि वैज्ञानिक चयन मण्डल, नई दिल्ली ने कहा कि सामान्य जल एवं मृदा वाले क्षेत्रों में खाद्यान्न उत्पादन में ठहराव की स्थिति आ गई है । आने वाले समय में लवणीय, क्षारीय व अन्य समस्याग्रस्त भूमियों को सुधार कर उत्पादन बढ़ाने की दिशा में सघन प्रयासों की आवश्यकता है । उन्होंने वैज्ञानिकों का आह्वान किया कि वो अभी तक लवणीयता के क्षेत्र में किये गये अनुसंधानों पर पुनर्विचार कर आगे की रण नीति बनावें ताकि समस्याग्रस्त मृदाओं में सतत् उत्पादन लिया जा सके । भूमिगत जल के अधिक गहराई से किये जा रहे दोहन के कारण उत्पन्न समस्याओं पर भी वैज्ञानिकों को विचार कर उत्पन्न होने वाली समस्याओं के निदान संबंधी उपाय भी सुझाने चाहिए । इस अवसर पर उन्होंने कहा कि राष्ट्रीय कृषि विकास योजना के तहत राज्यों को मिलने वाली कुल राशि का 15-20 प्रतिशत हिस्सा लवण प्रभावित क्षेत्रों के विकास पर खर्च किया जाना चाहिए । उन्होंने नहर के दोनों तरफ वृक्ष लगाने पर जोर दिया ताकि पानी के रिसाव को कम किया जा सके और बायोमास को भी बढ़ावा मिले । साथ ही यह तकनीकी लवणता के फैलाव को रोकने में भी मददगार साबित होगी । उन्होंने भू-जल पुनर्भरण, शहर के गंदे पानी का उपयोग कर शहर के आसपास पौधे लगाकर हरित पट्टी बनाने पर भी जोर दिया । साथ ही उन्होंने नैनो टेक्नोलॉजी, जैनेटिक इंजीनियरिंग आदि नवीन प्रौद्योगिकी को बढ़ावा देने की बात कही । उन्होंने बदलते जलवायु परिवेश में फसल, पशु, मछली फल, मुर्गी व पेड़ पौधे उगाकर समन्वित कृषि प्रणाली अपनाने पर जोर दिया ताकि खेती में होने वाली जोखिम को कम किया जा सके ।

इस अवसर पर राजस्थान पशु चिकित्सा एवं पशु विज्ञान विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर ए. के. गहलोत ने कृषि में पशुओं की भूमिका पर बोलते हुए कहा कि लवण प्रभावित क्षेत्रों में उगने वाली वनस्पति ऊंट, भेड़ व बकरियों के लिए उपयोगी है ।

कृषि विश्वविद्यालय, कोटा के कुलपति प्रोफेसर जी. एल. केशवा ने कहा कि हड़ोती क्षेत्र में मौसम बदलाव के कारण धनिया व सरसों की फसलों पर विपरीत प्रभाव पड़ रहा है ।

उन्होंने वैज्ञानिकों द्वारा किया जा रहे अनुसंधानों को किसान की समस्याओं के अनुसार करने पर जोर दिया ।

भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के सहायक महानिदेशक डॉ. एस.के. चौधरी ने कहा कि भविष्य में लवणता के क्षेत्र में किये जा रहे अनुसंधान एवं विकास के कार्यों को प्रभावी रूप से लागू कर लवणग्रसित क्षेत्रों का हरा-भरा एवं उपजाऊ बनाया जाए ।

केन्द्रीय मृदा लवणता अनुसंधान संस्थान, करनाल के निदेशक - डॉ. पी. सी. शर्मा ने सम्बोधित करते हुए कहा कि देश में लवणग्रस्त मृदा एवं जल वाले क्षेत्रों को चिन्हित कर वहाँ के किसानों को अधिक से अधिक अनुसंधान का लाभ दिया जाए । उन्होने गेहूँ की के.आर.एल.-210 व के.आर.एल.-213 तथा सरसों की सी.एस.-54 सी.एस.-58 किस्मों को खारे पानी व मृदा में उगाने की सलाह दी । इस अवसर पर डॉ. राजेन्द्र कुमार यादव व डॉ. विनय कुमार मिश्रा को सोसाइटी के फैलो अवार्ड से सम्मानित किया गया ।

कार्यक्रम में लगभग 400 वैज्ञानिकों, शोधकर्ताओं व किसानों ने भाग लिया ।